Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 3, July-2023
ISSN No: 2583-8792

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज और श्रीमदभगवदगीता की आध्यात्मिक विचारधारा

Dr. Suman Bala[1], Dr. Naveen Kumar[2]

[1] Former Scholar, Guru Jambheshwar Religious Center, Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar, Haryana
[2] Former Scholar, Department of Education, Kurukshetra University, Kurukshetra

परिचय

गुरु जाम्भोजी ने संसार के सभी धर्मग्रन्थों में गीता को श्रेष्ठ ग्रंथ माना है | उन्होने गीता के प्रति गहरी आस्था व निष्ठा का परिचय देते हुए बताया है कि गीता के ज्ञान को आचरण में उतारने कि अत्यन्त आवश्यकता है तथा गीता के ज्ञान में भगवान का निवास है | गीता का गौरव गायत्री से भी महान है क्योंकि ये सिर्फ गीता ही है जिसका अभ्यास करने वाला पुरुष मुक्तिदाता भगवान को भी अपने अधीन कर लेता है | गीता के ज्ञान को धारण करके ही जीव चौरासी लाख जीव-योनियों से छुटकारा पा सकता है तथा मन की सभी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है | गुरु जाम्भोजी के अनुसार गीता का ज्ञान सनातन व शाश्वत है तथा यह ज्ञान अक्षय ज्ञान है | जांभाणी साहित्य के अनुसार गीता ईश्वर की सर्वोच्च वास्तविकता है | सनातन धर्म के स्वामी विष्णु भगवान हैं और जाम्भोजी के अनुसार मुक्त आत्मा विष्णु भगवान के साथ तदाकार होकर उनमें ही लीन हो जाती है | यही वास्तविक परब्रहम है | ये सभी गुण गुरु जम्भेश्वर के व्यक्तित्व और कृतित्व में समाविष्ट थे | श्री कृष्ण जी की जीवन -लीला और भगवान जम्भेश्वर जी की जीवन लीला में बहुत सारी विशेषताओं में पारस्परिक सम भाव की स्थिति है और दोनों ही कर्मयोगी हैं| भारतीय परम्परा के अनुसार यह माना जाता है कि ज्ञान गुरु के बिना प्राप्त नहीं होता तथा ज्ञान प्राप्त करना एक चेतना प्रक्रिया है और यह ज्ञान गुरु की चेतना से सीधा शिष्य में आ जाता है क्योंकि गुरु भी चेतन है |

सतगुरु मिलियौ सतपंथ बतायौ, वेद गरथ उद्गारु |[1]

जिस प्रकार पानी ऊपर से नीचे आता है और कभी भी नीचे से ऊपर नहीं जाता उसी प्रकार शिष्य के सामने भी अच्छे-बुरे रास्ते आते हैं किन्तु अपने गुरु के मार्गदर्शन के दवारा वह अपने लिए सही रास्ते का चुनाव कर लेता है | गुरु जम्भेश्वर जी महाराज ने सम्पूर्ण जम्भवाणी में सामाजिक,

धार्मिक, सांस्कृतिक, सैद्धांतिक, और व्यावहारिक मूल्यों की भाव-भूमि पर उद्बोधन किया है | उन्होने समाज की विभिन्न पदतियों का, अवस्थाओं, विधियों, नियमों, विचारों का वर्णन किया है जिस से समाज रूपी आईने में प्रत्येक मानव अपने कर्मों को अच्छे से देख सकता है |

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषू कदाचन |
मा कर्मफल हेतु भुरर्मा ते सड़ोअस्त्वकर्मकर्मणि |[2]

गीता में श्री कृष्ण ने कर्म को श्रेष्ठ बताया है | मनुष्य को उसकी कर्म पद्ति के अनुसार ही फल मिलता है | कर्म न करने से कर्म करना श्रेष्ठ है | गीता भारतीय अध्यात्म परम्परा की ही नहीं अपितु विश्व का महान धार्मिक ग्रंथ है | गीता योगेश्वर श्री कृष्ण के मुख से उच्चरित उपदेशात्मक शैली में उदधृत की गयी है जिसमें ज्ञान योग, भक्ति योग, व कर्म योग का विस्तार से वर्णन है| यह महान धार्मिक ग्रंथ केवल दर्शनशास्त्र का विषय न होकर एक प्राचीन धर्म का विषय है जिसका मूल उद्देश्य निष्काम कर्म है| गुरु जम्भेश्वर जी महाराज की वाणी भी ईश्वर की वाणी है | भगवान जम्भेश्वर और श्री कृष्ण दोनों ही विष्णु के पूर्ण अवतार है | दोनों का जन्म ही भादवा वदी अष्टमी के दिन अर्द्धरात्री को हुआ था| जम्भवाणी भी गीता की भांति उपदेशात्मक शैली में उदधृत है| इसका भी मुख्य उद्देश्य लोक कल्याण, निष्काम कर्म, आत्मोंलब्धि और मानव उत्थान ही है| परंतु जम्भवाणी और गीता में जगह-जगह समानता होते हुए भी कहीं न कहीं विभिन्नता प्रकट हो ही जाती है | गीता हिन्दू धर्म के किसी एक संप्रदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करती, अपितु समूचे रूप में हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करती है व सभी धर्मों के विश्वजनीनता के साथ प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें काल और देश की कोई सीमाएं नहीं है | गुरु जम्भेश्वर जी ने अपनी वाणी में गीता के महत्व को बताते हुए कहा है कि

गीता नाद कविता नाऊँ |
रंग फटा रस टारू |[3]

अर्थात गीता केवल कवि की कल्पना मात्र नहीं बल्कि ईश्वर का दिया हुआ सनातन ज्ञान है जो भगवान के अनहदनाद से निकला हुआ है जो मानव को शाश्वत ज्ञान की ओर प्रेरित करता है | यह ज्ञान मानव को सन्मार्ग अपनाने की प्रेरणा देता है | जिस प्रकार गीता में श्री कृष्ण जी ने भटके हुये अर्जुन को शाश्वत सत्य का ज्ञान देकर उचित पथ प्रदर्शित किया, ठीक उसी प्रकार गुरु जम्भेश्वर जी महाराज ने भी मोह, माया, मध, लोभ, अज्ञान व भ्रम में फसे हुए जनमानस को आत्मकल्याण व आत्मोंपलब्धि की ओर प्रेरित किया | श्री कृष्ण जी ने अर्जुन के माध्यम से बताया कि सब वस्तुओं में मैं हूँ व सत्य का जो भी बीज है वह मैं हूँ | इस संसार के आदि से अंत तक मैं ही हूँ और संसार के सारे क्रिया-कलाप मेरे दवारा ही सम्पन्न होते हैं | मेरी दिव्य शक्तियों का

कोई अंत नहीं है | जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ वह तो मात्र मेरी असीम महिमा का केवल अंश मात्र है| जो कोई भी प्राणी गौरव व शक्ति से युक्त है वह मेरे ही तेज के अंश से उत्पन्न हुआ है| यानि सभी वस्तुओं में परमात्मा का निवास है ऐसे ही सिद्धियुक्त एवं योगिक विभूतियों के मालिक गुरु जम्भेश्वर जी महाराज ने स्वयं के विषय में बताया है|

अनंत जुगां मां अमर भणिजू |
नां मेरे पिता न मायो |
ना मेरे माया न छाया रूप न रेखा |
बाहरि भीतरि अगम आलेखा |[4]

गुरु जम्भेश्वर जी के अनुसार मैं अनेक युगों में अमर हूँ | सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड में व्याप्त हूँ | मेरे न कोई पिता है न कोई माता और न ही मेरे ऊपर किसी माया की छाया है | न मेरा कोई रंग-रूप है , न कोई आकार है , न कोई चिन्ह है , न कोई रेखा है | मैं बाहर भीतर सर्वत्र सर्व व्यापक रूप में विधमान रहता हूँ | उन्होने स्वयं की अनंत शक्तियों, जीवन विधियों, योगसिद्धियों, विभिन्न चमत्कारों, अनेक अवतारों व रूपों का वर्णन करते हुए अपने अनेक महान कार्यों का वर्णन किया है जो केवल स्वयं सृष्टिपालक विष्णु ही कर सकता है | उन्होने यह भी बताया की वे अपने साथ अदभूत शक्तियाँ व विभूतियाँ लेकर पैदा हुए हैं | गुरु जम्भेश्वर जी महाराज कहते है कि मैं स्वयं लौकिक और अलौकिक रूप में छत्तीस युगों के विषयों में जानकारी रखता हूँ | मैं इन छतीस युगों के अतिरिक्त इससे पूर्व के छत्तीस युगों की भी मुझे जानकारी है | जिनकी समय अवधि को मापा नहीं जा सकता | जो समय अवधि असीम और अनंत है | जिनकी मुझे जानकारी है | मैं स्वयं सृष्टि के पूर्व में था अभी भी सर्वत्र व्याप्त हूँ | आगे भी रहूँगा | मैं परमसत्ता के रूप में लौकिक और अलौकिक सभी जगह पर निवासित हूँ | ये प्राणी अपने अज्ञान के कारण अंधे होकर अपने विनाश की और दोड़ रहे हैं और दैवीय नियंत्रक इन सबको होने दे रहा है | क्न्योकि ये सब अपने कर्मो का फल भुगत रहे हैं | जब हम किसी कर्म को करने के लिए तत्पर होते हैं | तो हम उसके परिणामों के लिय ऊधत रहते हैं | स्वतंत्र क्रियाएँ हमें उनके परिणामों का वशवर्ती बना देती हैं क्न्योकि यह कारण और कार्य का नियम दैवीय मन की अभिव्यक्ति है | इसलिय यह भी कहा जाता है कि ब्रहम इस नियम का कार्यान्वित कर रहा है|

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवर्म जन्म मृतस्य छ |
तस्मादप्रिहरयोर्थे न त्वं शोचितुमहर्सि |[5]

गीता के अनुसार जन्म- मृत्यु एक चक्र के रूप में निरंतर चलता रहता है अर्थात जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है | संसार की समस्त जीव योनियाँ निरंतर प्रकट-अप्रकट होती

रहती हैं | इनमें जन्म मृत्यु से कोई प्रभाव नही होता | गीता मानव के इस विश्वरूप कि धारणा दवारा इस बात को स्पष्ट करती है कि किस प्रकार अपनी विशालता, सुंदरता और आतंक के सहित सारा ब्रहमांड, सारे देवता, महात्मा, पशु और पौधे परमात्मा के जीवन कि समृद्धि के अंदर ही समाविष्ट है | गुरु जम्भेश्वर जी ने अपने दैवीय रूप के विषय में बतलाया तो विष्णु के रूप में उन्होने अनेक अलौकिक कार्यों को सम्पन्न किया | उन्होने अपने ईश्वरीय स्वरूप कि व्याख्या की तो सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड, सूर्य, चंद्रमा, तारे, पहाड़, नदियां, वनस्पति और चराचर जगत जब नहीं था तो भी उस समय मैं परमसत्ता के रूप में विधमान था | मेरा आदि, मध्य और अन्त नहीं है | मैंने अपनी काया का सृजन स्वयं किया है | यदि मैं चाहूँ तो एक शरीर से करोड़ों शरीरों का निर्माण कर सकता हूँ | चराचर जगत की समस्त जीव-योनियों को एक क्षण में संभाल लेता हूँ | दृश्य और अदृश्य रूप से मैं त्रिलोक में व्याप्त हूँ | इस सृष्टि का निर्माण मैंने ही किया है | मैं ही प्रलय और उत्पति का कारण हूँ | मैं स्वयं ही अपरम्पार विष्णु हूँ | यह गुरु जम्भेश्वर जी का आलौकिक और दैवीय स्वरूप है | गुरु जम्भेश्वर जी भी श्री कृष्ण की भांति अपने अनेक अवतारों का वर्णन करते हैं|

बहुनि में व्यतितानि जनमानि तव चार्जुन |
तान्यह वेद सर्वाणी न त्वं वेतहा परमतप |[6]

श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मेरे और तुम्हारे अनेक जन्म हो चुके हैं परंतु मेरे भेद को कोई भी नहीं जनता | ऐसे ही स्वरूप की व्याख्या गीता और जंभवाणी दोनों करती हैं | जम्भवाणी गुरु जम्भेश्वर जी का करती है और गीता श्री कृष्ण जी का करती है | दोनों ही विश्वरूप परमात्मा हैं | दोनों ही विष्णु का प्रतिनिधित्व करते हैं | दोनों ने ही अर्थात कृष्ण और गुरु जम्भेश्वर जी ने बचपन में गाये चरायी थी | बचपन में दोनों ने ही अनेक अदभूत लीलामय प्रक्रिया की थी | जांभाणी साहित्य के अनुसार श्री कृष्ण स्वयं गुरु जम्भेश्वर का स्वरूप हैं और गुरु जम्भेश्वर स्वयं श्री कृष्ण के स्वरूप में हैं | दोनों परब्रहम हैं | दोनों सगुण और निर्गुण रूपों में एक समान हैं | दोनों सनातन, शाश्वत शक्ति सम्पन्न हैं | दोनों मुक्तिदाता हैं | दोनों ही सिद्ध पुरुष और परम पुरुष हैं |

अतः निष्कर्ष यह कहा जाता है कि श्री कृष्ण और गुरु जम्भेश्वर जी ने अपने उपदेशों व सिद्धांतों में आत्मिक जीवन कि एकता पर बल दिया है जिसे दार्शनिक ज्ञान, भक्तिपूर्ण प्रेम या परिश्रम पूर्ण कर्म के रूप में नहीं बांटा जा सकता | कर्म, ज्ञान और भक्ति एक दूसरे के पूरक हैं | इन्होने इस जगत में मानव शरीर को धारण किया और सभी जीवों का उद्धार किया | दोनों ने ही शुद्ध आचार संहिता का निर्माण किया है | दोनों ने मन, बुद्धि, शरीर और इंद्रियों को वश में करने का उपदेश दिया है | इन्होने सत, चित और आनंद को समान दृष्टि से देखा है | उनकी आत्मा एक है अंतर केवल उनके शरीर व रूप में है |

संदर्भ:

[1]. जम्भवाणी मूल संजीवनी व्याख्या, डा० किशनाराम बिश्नोई, पृ०-68
[2]. श्री मदभगवत गीता, पृ०-2/47, 2/48, 3/4
[3]. जम्भवाणी मूल संजीवनी व्याख्या, डा० किशनाराम बिश्नोई, पृ०-143
[4]. जम्भवाणी मूल संजीवनी व्याख्या, डा० किशनाराम बिश्नोई, पृ०-68
[5]. श्री मदभगवत गीता, पृ०-2/27
[6]. श्री मदभगवत गीता, पृ०-4/5